ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-57-62**,YEAR-2015

महाभारत में महिला शिक्षा वर्तमान में प्रासंगिकता

❑ **प्रियंका श्रीवास्तव**

सारांश– *भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रमुख ऐतिहासिक महाभारत ग्रन्थ जो महर्षि व्यास का सर्वश्रेष्ठ कीर्तिस्तम्भ है। इसे पढ़कर कुछ पढ़ना तथा इसको समझकर और कुछ समझना शेष नहीं रह जाता है, अर्थात्* ***'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहस्ति न तत् क्वचित्'*** *इस उक्ति में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है।*

यह काव्य शाश्वत निधियों का अक्षय भण्डार होने के कारण भविष्य में सभी कवियों व ग्रन्थकारों के लिए उपजीव्य काव्य बना। इस प्रकार अद्भुतकर्मा महर्षि व्यासदेव के इस अन्तःकरण शोध का मैं अपने विवेक द्वारा यथोचित रूप से 'महिला शिक्षा' के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रही हूँ। अगर महाभारतकालीन 'स्त्री शिक्षा' की ओर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि बालिकाओं को विद्याध्ययन के लिए स्वगृह में ही शिक्षा दी जाती थी। वे गणित, नृत्य, कला, संगीत, मन्त्र विद्या इत्यादि विभिन्न शिल्पकलाओं की शिक्षा में दक्ष होने के साथ–साथ माता–पिता द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान से अपने जीवन को समुन्नत बनाने का प्रयास करती थीं। प्रायः माता–पिता का यह प्रथम कर्तव्य भी है कि सन्तान सुयोग्य व सुसभ्य बनने की शिक्षा दे। क्योंकि? संस्कार और शिक्षा से बनता है मनुष्य का चरित्र अर्थात् माता–पिता अपनी सन्तान का जैसा चरित्र बनाते हैं, वैसा ही बनता है उनका भविष्य। अधिकांशतः माता के व्यवहार का प्रभाव पिता की शिक्षा से भी अत्यधिक पड़ता है। अतएव व्यासकृत इस ग्रंथ में समस्त गुरुओं में माता को सर्वश्रेष्ठ बताकर ऐसा कहा गया है–

'गुरुणां चैव सर्वेषां माता परमको गुरुः' [1]

अर्थात् समस्त गुरुओं में माता परम गुरू मानी जाती है। वह चाहे तो संतान का निर्माण अपनी इच्छा और आवश्यकता के अनुसार कर सकती है। जैसे–माता सुभद्रा ने अपनी सन्तान को जन्म से पूर्व ही शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने वीर अभिमन्यु को चक्रव्यूह वेधने की शिक्षा गर्भ में ही प्रदान कर दी थी। अतः माता द्वारा पुत्र को दिया गया ज्ञान महाभारतकाल में उस शिक्षा की ओर संकेत कर रहा है, जिसमें माता अपने पुत्र को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए गर्भकालीन अवस्था से ही उसमें क्षमता उत्पन्न कर देती थी। वर्तमान समय में महिला को देश के कर्णधारों के लिये ऐसी ही सशक्त, सबल, साक्षर की आवश्यकता है, जो सन्तान में वीर, पराक्रमी बनने की क्षमता का विकास कर सके। क्योंकि? हमारे देश की धरोहर ये बच्चे ही कल का भविष्य होगें। क्रमशः शिक्षा के विषय में यह कहना उचित ही है कि यह शिक्षा अविरल रूप से जन्म के पूर्व से लेकर मृत्युपर्यन्त तक अबाध गति से सदा जीवनपर्यन्त चलती रहती है। श्रीमद्भगवद्गीता में इस ज्ञान की महत्ता को दर्शाते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शब्दों में कहा था–

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।[2]

अर्थात् 'इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्तःकरण हुआ मनुष्य अपने–आप ही आत्मा में पा लेता है।' ज्ञान का स्वरूप मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। अनेक समस्याओं का निदात्मक उत्तर खोज निकालने में मदद प्रदान करता है। इसका प्रमुख रूप से उदाहरण कुन्तीभोज की पुत्री माता कुन्ती के जीवनकाल में परिदृश्य होता है। यदा कुरुवंश के राजा पाण्डु को मुनि किंदम द्वारा शाप प्राप्त होने पर सन्तान प्राप्ति के लिए संकट उत्पन्न

शोध छात्रा–संस्कृत, म.गाँ.चि.ग्रा.वि.वि.,चित्रकूट, सतना, (म0प्र0), भारत

होने लगा। तदा पत्नीयोचित अधिकार भाव से माता कुन्ती ने पूर्व में प्राप्त महर्षि दुर्वासा द्वारा प्रदत्त मन्त्र विद्या के ज्ञान का स्मरण करके वर्तमानकालीन अपने जीवन की इस सन्तानोत्पत्ति जैसी समस्या का समाधान तत्क्षण अन्वेषण कर लिया था। साथ ही धर्म की रक्षा के लिए इस वशीकरण मन्त्र से मद्रराज शल्य की बहन सपत्नी समान माद्री की सहायता भी की थी। ऐसा इस इतिहास शिरोमणि महाभारत में उल्लेख किया गया है–

"ततो धर्मोपनिषदः श्रुत्वा भर्तुः प्रिया पृथा।
धर्मानिलेन्द्रान् स्तुतिभिर्जुहाव सुतवाञ्छया।
तद्दत्तोपनिषन्माद्री चाश्विनावाजुहाव च।
तापसैः सह संवृद्धा मातृभ्यां परिरक्षिताः।
मेध्यारण्येषु पुण्येषु महतामाश्रमेषु च।।"[3]

अर्थात् 'पतिप्रिया कुन्ती ने पति मुख से धर्म–रहस्य की बातें सुनकर पुत्र पाने की इच्छा से मन्त्र–जप पूर्वक स्तुति द्वारा वायु और इन्द्र देवता का आह्वान किया। इस प्रकार इन पाँचों देवताओं से पाण्डवों की उत्पत्ति हुई। पाँचों पाण्डव अपनी दोनों माताओं द्वारा ही पाले–पोसे गये। वे वनों में और महात्माओं के परमपुण्य आश्रमों में ही तपस्वी लोगों के साथ दिनोंदिन बढ़ने लगे।' अतः जीवन में अर्जित किये गये ज्ञान का सदुपयोग व्यक्ति के जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान बनकर मदद करता है। ज्ञान मानव की मानसिक एवं आध्यात्मिक खुराक है, जिसके आधार पर ही व्यक्तित्व विकास सम्भव है। इसके आभाव में व्यक्ति की जीवन यात्रा अधूरी ही प्रतीत होती है। आज के परिवेश में कई ऐसी महिलायें भी है जो अपनी अन्तर्निहित योग्यता व क्षमता को पूर्ण रूप से पहचान नहीं पा रही है। शक्ति की आत्मानुभूति न होने के कारण आज की संघर्षशील महिला अनेक प्रश्नों के निराशाजनक उत्तर को जन्म दे रही है। अतएव नारी को पूर्व की महिला के समान अपनी शक्ति का आत्मबोध, आत्मपरिचय करना होगा, जिससे भविष्यकालीन समस्या काा उपचार कर सकने में समर्थ हो सके। शिक्षा का उद्देश्य प्रकट करते हुए वर्तमान के एक विद्वान 'हरबर्ट स्पेन्सर' ने शिक्षा को आत्मरक्षा'[4] की क्रिया के रूप में स्वीकार किया है। उनके इन वर्तमान विचारों की सिद्धि महाभारतकालीन समय में याज्ञसेनी द्रौपदी के चरित्र द्वारा पूर्व में प्रमाणित होती दिखाई दे रही है। पतिव्रता कृष्णा ने शिक्षा को अपने जीवन का अस्त्र बनाकर प्रत्येक हिंसा व अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार किया। जब हस्तिनापुर की भरी सभा में दुःशासन द्वारा अमानवीय व्यवहार किया जा रहा था, उस समय उनकी सहायता के लिए कोई उपस्थित नहीं हुआ। तब उन्होंने पूर्व में महात्मा वशिष्ठ जी द्वारा प्रदत्त किये गये ज्ञान का स्मरण करते हुए भारी विपत्ति में पड़ने पर भगवान श्री हरि के नाम का स्मरण कर अपनी आत्मरक्षा तो की ही साथ ही महाकाल शिव द्वारा वरदान से प्राप्त पाण्डव पतियों को दुर्योधन की दासता से मुक्त भी कराया था। यथार्थ रूप से स्पेन्सर नामक विद्वान द्वारा कहा गया यह कथन सत्य ही है कि संकटकालीन अवस्था में यह शिक्षा आत्मरक्षा की क्रिया है। आज के समाज में अगर नारी शोषण, हिंसा या उत्पीड़न से मुक्त होना चाहती है तथा अपने हितों की रक्षा में जागरुकता लाना चाहती है तो उसे शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है, जिससे वह किसी प्रकार के अमानवीय व्यवहार का शिकार न हो सके। हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों में अशिक्षा की अधिकता होने के कारण उन्हें पति के व्यापार, सम्पत्ति,बीमे की रकम और जमा पूँजी आदि की जानकारी नहीं हो पाती जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि इसका लाभ उठाकर उसके ससुराल वाले उससे कागजों पर अँगूठा लगवा कर उसकी वैधानिक सम्पत्ति को हड़पने काा प्रयत्न करते हैं। अतः शिक्षित नारी अपने अधिकारों की पहचान करके किसी प्रकार के अत्याचार का शिकार नहीं हो सकेगी। महाभारत प्रणीत महर्षि वेदव्यास ने अपने काव्य में नारी की भूमिका इतनी सशक्त व निर्णायक रूप में अभिव्यक्त की है, जिसमें उसकी सहभागीदारी पुरुष के समान गृहस्थी के कार्यभार से लेकर राजकीय कार्यों के संचालन में परिदृश्य हो रही है। महाभारत का 'वनपर्व' द्रुपद कुमारी कृष्णा की अगणित उक्तियों द्वारा शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत शलाघ्नी य प्रतीत हो रहा है। वह अपनी बुद्धि की चमक से राजा युधिष्ठिर के क्रोध को प्रज्जवलित करते हुए नीतिपूर्ण वचनों से क्षत्रिय धर्म के कर्त्तव्य की शिक्षा का स्मरण कराते हुए कहती हैं–

"द्रुपदस्य कुले जातां स्नुषां पाण्डोर्महात्मनः। ।
धृष्टद्युम्नस्य भगिनीं वीरपत्नीमनुव्रताम्।
मां वै वनगतं दृष्ट्वा कस्यात् क्षमसि पार्थिव।।
न निर्मन्युः क्षत्रियोऽस्ति लोके निर्वचनं स्मृतम।
तदद्य त्वयि पश्यामि क्षत्रिये विपरीतवत्।।
यो न दर्शयते तेजः क्षत्रियः काल आगते।
सर्वभूतानि तं पार्थ सदा परिभवन्त्युत।।"

अर्थात् 'मैं द्रुपद के कुल में उत्पन्न हुई महात्मा पाण्डु की पुत्रवधू वीर धृष्टद्युम्न की बहिन तथा वीर शिरोमणि पाण्डवों की पतिव्रता पत्नी है। महाराज! मुझे इस प्रकार वन में कष्ट उठाती देखण्कर भी आप शत्रुओं के प्रति क्षमाभाव कैसे धारण करते हैं? संसार में कोई भी क्षत्रिय क्रोध रहित नहीं होता, क्षत्रिय शब्द की व्युत्पत्ति ही ऐसी है, जिससे उसका सक्रोध होना सूचित होता है। परन्तु आप जैसे क्षत्रिय में मुझे यह क्रोध का अभाव क्षत्रियत्व के विपरीत सा दिखायी देता है। कुन्तीनन्दन! जो क्षत्रिय समय आने पर अपने प्रभाव को नहीं दिखाता, उसका सब प्राणी सदा तिरस्कार करते हैं।' इस प्रकार नाना प्रकार के उक्त सुझावों द्वारा सुयोग्य मंत्री की भाँति राजनीतिक शिक्षा को आधार बनाकर पाण्डु पुत्र युधिष्ठिर को सफल भूपाल बनने की शिक्षा देती हैं–

"तदहं तेजसः कालं तव मन्ये नराधिप।
धार्तराष्ट्रेषु लुब्धेषु सततं चापकारिषु।।
न हि कश्चित् क्षमाकालो विघतेऽद्य कुरुन् इति।
तेजसश्चागते काले तेज उत्स्त्रष्टुमर्हसि।।
मृदुर्भवत्यवज्ञात स्तीक्ष्णादु द्विजते जनः।
काले प्राप्ते द्वयं चैतद् यो वेद स महीपतिः।।"[6]

अर्थात् नरेश्वर! धृतराष्ट्र के पुत्र लोभी तथा सदा आपका अपकार करने वाला है, अतः उनके प्रति आपके तेज के प्रयोग का यह अवसर आया है, ऐसा मेरा मत है, अतः उन पर आपको अपने तेज का ही प्रयोग करना चाहिये। कोमलतापूर्ण बर्ताव करने वाले की सब लोग अवहेलना करते हैं और तीक्ष्ण स्वभाव वाले पुरुष से सबको उद्वेग प्राप्त होता है, जो उचित अवसर आने पर इन दोनों का प्रयोग करना जानता है, वही सफल भूपाल है।' धर्म में तत्पर रहकर पांचाल राजकुमारी द्रौपदी द्वारा कहे गये प्रत्येक वचन पाण्डुकुमार को कर्म करने के लिए प्रवृत्त कर रहे हैं। ऐसे कई अवसर याज्ञसेनी द्रौपदी के जीवन में दृष्टिगत होते है। जिससे ज्ञात होता है कि उस काल की नारी राजनीतिक मन्त्रणा व परामर्श देने में स्वतन्त्रता थीं। आज भारतीय सभ्य समाज में अगर नारी के शिक्षित हो जाती है तो उन्हें अपने परिवार, समीपवर्ती समाज, समुदाय को समझने में किसी प्रकार कठिनाई का समाना नहीं करना पड़ेगा और भविष्य में सामाजिक एकता, व राष्ट्रीय सद्भावना का संचार हो सकेगा। जिससे निकट भविष्य में नारी विशेष उपलब्धियों को ग्रहण सहजता से ग्रहण करने में समर्थ हो सकेगी। गृहस्थ जीवन में भी नारी–जाति गृह की संचालिका होती है। उसके कंधे में परिवार का सृजन व निर्माण दोनों का दायित्व निर्भर होता है। सर्वप्रथम नागरिकता की शिक्षा भी नारी के संरक्षण में संतान को प्राप्त होती है। यदि स्त्री शिक्षित नहीं होती तो वह परिवार में रहकर नागरिकता का प्रसार करने का उत्तरदायित्व भी न्यायापूर्वक निभाने में असफल दिखाई देती है, जिससे न तो वह स्वस्थ बालक को समाज में दे पाती है और न ही अच्छा नागरिक। नागरिकता का प्रथम पाठ माता की गोद में ही मिलता है, जो पालना झुलाती है, वहीं शासन भी करती है, संसार में विभिन्न महापुरुषों की जीवनियों को पढ़ने से यही पता चलता है कि अगर उनकी माता न सिखातीं तो वे वैसे सन्त, महापुरुष, क्रांतिकारी या योद्धा नहीं बन पाते। इसलिए स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्व अनुभव किया जाता है। श्रीव्यासकृत महाभारत के इस महाकाव्य में देवी सुभद्रा की शिक्षा सम्बंधी योग्यता शिक्षिका रूप में प्रमाणित हो रही है। जब काम्यक वन में पाण्डवों के पास भगवान श्रीकृष्ण मिलने आते हैं तब याज्ञसेनी द्रौपदी को उनके पुत्रों के सकुशल होने का समाचार देते हुए कहते हैं कि धनुर्वेद में विशेष अनुराग व सत्पुरुषों द्वारा आचरित सदाचार व धर्मपालन की शिक्षा से शिक्षित आपके पुत्र देवी सुभद्रा द्वारा प्रशिक्षित किये जा रहे हैं। महाभारत के अनुसार–

'यथा त्वमेवार्हसि तेषु वृत्तं
प्रयोक्तुमार्या च तथैव कुन्ती।
तेष्व प्रमादेन तथा करोति
तथैव भूयश्च तथा सुभद्रा।।'[7]

अर्थात् 'उन बालकों को तुम सदाचार की जैसी शिक्षा दे सकती हो, आर्य कुन्ती भी उन्हें जैसा सदाचार सिखा सकती हैं, वैसी शिक्षा देने की योग्यता सुभद्रा में भी है। वह बड़ी सावधानी के साथ वैसी ही शिक्षा देकर उन सब

बालकों को सदाचार में प्रतिष्ठित करती है।' अर्थात् एक शिक्षित माता शिक्षा का मूल्य समझती है और माँ के रूप में वह जानती है कि अपनी सन्तान को उसकी रुचि, क्षमता, आवश्यकता के अनुरूप किस प्रकार की शिक्षा दें, जिससे राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति में उसका मार्गदर्शन कर सकें। अतः स्त्री के जीवन में विकास हेतु शिक्षा की महती आवश्यकता प्रतीत होती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन में क्षमता भी उत्पन्न करता है। पारम्परिक रूप से द्वापरयुग की 'महिला शिक्षा' पारस्परिक वार्तालाप की निपुणता पर भी आधारित दृष्टिगत होती है। अर्थात् मौखिक रूप से भावनाओं को व्यक्त करके यह शिक्षा ग्रहण की जाती थी। उदाहरण के लिये भगवान श्रीकृष्ण की महारानी सत्यभामा को राजकुमारी द्रौपदी द्वारा उपदेशात्मक शिक्षा प्राप्त होती है। देवी कृष्णा ने अपने उपदेश में उन अंधविश्वास व आडम्बरों का सक्त विरोध किया जो नारी को उनके कर्मपथ से विचलित करते हैं। इन सुझावों को सक्रिय रूप से सुनकर महारानी सत्यभामा निजी जीवन में इसे ग्रहण करती हैं। वार्तालाप के इसी क्रम में द्रुपदकन्या कृष्णा ने यह भी बताया कि उस काल की नारी अर्थशास्त्र में ज्ञाता भी थी। वह राज्य के वित्त सम्बंधी गणना, आय–व्यय बचत का हिसाब व अर्थकोष की पूर्ण जानकारी का ज्ञान भली प्रकार से रखने में निपुण थी। वे यशस्विनी सत्यभामा को सम्बोधित करते हुए कहती हैं–

"शतं दासी सहस्त्राणि कौन्तेयस्य महात्मनः
कम्बुकेयूरधारिण्यो निष्ककण्ठयः स्वलङ्कृताः
तासां नाम च रूपं च भोजनाच्छादनानि च।
सर्वासामेव वेदाहं कर्म चैव कृताकृतम्।।"[8]
एतदासीत् तदा राज्ञो यन्महीं पर्यपालयत्।
येषां संख्याविधिं चैव प्रदिशामि शृणोमि च।।
सर्वराज्ञः समुदयमायं च व्ययमेव च।
एकाहं वेधि कल्याणि पाण्डवानां यशस्विनी।।
अधृष्यं वरुणस्येव निधिपूर्ण मिवोदधिम्।
एकाहं वेधि कोशं वै पतीनां धर्मचारिणाम्।।"[9]

अर्थात् 'कुन्तीनन्दन महात्मा युधिष्ठिर के एक लाख दासियाँ थीं, जो हाथों में शंख की चूड़ियाँ भुजाओं में बाजूबंद और कण्ठ में सुवर्ण के घर पहनकर बड़ी सजधज के साथ रहती थीं। उन सबके नाम रूप तथा भोजन–आच्छादन आदि सभी बातों की मुझे जानकारी रहती थी। किसने क्या काम किया और क्या नहीं किया? यह बात भी उससे छिपी नहीं रहती थी। जिन दिनों महाराज युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थ में रहकर इस पृथ्वी का पालन करते थे, उस समय प्रत्येक यात्रा में उनके साथ एक लाख घोड़े और एक लाख हाथी चलते थे। मैं ही उनकी गणना करती, आवश्यक वस्तुएँ देती और उनकी आवश्यकताएँ सुनती थी। कल्याणी एवं यशस्विनी सत्यभामें! महाराज तथा अन्य पाण्डवों को जो कुछ आय–व्यय और बचत होती थी, उस सबका हिसाब में अकेली ही रखती और जानती थी। मेरे धर्मात्मा पतियों का भरा–पूरा खजाना वरुण के भण्डार और परिपूर्ण महासागर के समान अक्षय एवं अगम्य था। केवल मैं ही उनके विषय की ठीक जानकारी रखती थी।' इस प्रसंग द्वारा ज्ञात होता है कि उसकाल की नारी अर्थव्यवस्था व प्रजापालन जैसे हितार्थ कार्यों में पुरुष की सहभागी थी। आधुनिक युग में ऐसी ही सद्गृहिणी की आवश्यकता समाज को है जो अपने ज्ञान से पति व समाज के गृह तथा राष्ट्र कार्यों में बड़ी खूबसूरती के साथ इनके भार को हल्का कर सकने में सहयोग कर सकें। उस समय की शिक्षा का प्रारूप भी जीवन से भिन्न न होने के कारण जीविकोपार्जन के साधन रूप में स्वीकार किया गया है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करता था। उदाहरण स्वरूप अज्ञातवास की विषम परिस्थिति में पाण्डवों ने अपनी योग्यता अनुरूप वेश परिवर्तित कर अपने रूप को गुप्त कर लिया था। उसी प्रकार द्रौपदी ने अपनी क्षमतानुसार सैरन्ध्री का कार्य करते हुए रोजगार प्राप्ति का मार्ग स्वयं खोज निकाला। वह तरह–तरह के केशों का शृंगार, उबटन, अंगराग, शिल्पकर्मों द्वारा महारानी सुदेष्णा का शृंगार करती थीं। महाभारत के अध्ययन अनुसार–

"सैरन्ध्रयो रक्षिता लोके भुजिष्याः सन्ति भारत।
नैवमन्याः स्त्रियोयान्ति इति लोकस्यनिश्चयः।।
साहं ब्रुवाणा सैरन्ध्री कुशला केश कर्मणि।
युधिष्ठिरस्य गेहे वै द्रौपद्याः परिचारिका।
उषितास्मीति वक्ष्यामि पृष्टा राज्ञा च भारत।।"[10]

अर्थात् भारत! इस जगत् में बहुत सी ऐसी स्त्रियाँ हैं, जिनका दूसरों के घरों में पालन होता है और जो शिल्पकर्मों द्वारा जीवन निर्वाह करती हैं। वे अपने सदाचार से स्वतः सुरक्षित होती है। ऐसी स्त्रियाँ को

सैरन्ध्री कहते हैं। लोगों को अच्छी तरह मालूम है कि सैरन्ध्री की भाँति दूसरी स्त्रियाँ बाहर की यात्रा नहीं करती, (अतः सैरन्ध्री के वेश में मुझे कोई पहचान नहीं सकेगा) इसलिये मैं सैरन्ध्री कहकर अपना परिचय दूँगी। बालों को सँवारने और वेणी रचना आदि के कार्यों में बहुत निपुण हूँ। यदि राजा मुझसे पूछेंगे तो कह दूँगी कि मैं महाराज युधिष्ठिर के महल में महारानी द्रौपदी की परिचारिका बनकर रही हूँ।' इस प्रकार अपनी आत्मरक्षा व स्वपोषण करने में तत्पर प्रतिभासम्पन्न द्रौपदी ने शिल्पकर्मों द्वारा अपनी जीवनशैली व कार्यशैली को एक नूतन दिशा देकर आधुनिक महिलाओं को शिक्षित और स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा दी। भारत में ज्यादातर स्त्रियाँ पुरुषों पर आर्थिक निर्भर पायी जाती है। ऐसी स्थिति में कई बार नारी को पति के अत्याचार भी सहन करने पड़ते हैं, यदि ऐसे में जीवनयापन की कठिनाई सामने आती है तो नारी कई लघु व्यवसाय द्वारा आत्मनिर्भर बनने का प्रयास कर सकती है। जैसे–द्रौपदी ने सौन्दर्य प्रसाधन की शिक्षा द्वारा आत्मरक्षा के साथ–साथ अपना स्वपोषण भी किया। ठीक इसी प्रकार आज की नारी सौन्दर्य प्रसाधन के व्यवसाय से जुड़कर जिसको वर्तमान में ब्यूटी पार्लर कहा जाने लगा है। ऐसे कई लघु व्यवसाय द्वारा नारी अपने गृहस्थजीवन से बचत समय का सदुपयोग करके परिवार को आर्थिक मदद देने के साथ–साथ अपनी जरूरतों को भी पूरा कर सकती है। शिक्षा के इसी क्रम में महाभारतकालीन नारियों में पतिव्रता गान्धारी का नाम भी प्रमुख है जो सत्य, प्रतिज्ञ, उग्र तपस्वी नारी थीं। जिन्होंने सदैव धर्म की रक्षा के लिये पक्षपात रहित होकर अपने पुत्र दुर्योधन को विजित होने का आशीर्वाद दिया। अर्थात् धर्म में दृष्टि रखते हुए उन्होंने कहा जहाँ धर्म का वास हो उसी पक्ष की विजय हो। ऐसे न्यायप्रिय वचनों से सदैव अपने पुत्र का मार्गदर्शन करती हुई उसे सद्मार्ग में चलने की शिक्षा देते हुए कहती हैं–

"ऐश्वर्यकाम दुष्टात्मन् वृद्धानां शासनतिग।
ऐश्वर्यं जीवितं हित्वा पितरं मां च बालिश।।
वर्धयन् दुर्हृदां प्रीतिं मां च शोकेन वर्धयन्।।
निहतां भीमसेने स्मर्तासि वचनं पितुः।।"[11]

अर्थात् 'दुष्टात्मा दुर्योधन! तू ऐश्वर्य की इच्छा रखकर अपने बड़े बूढ़ों की आज्ञा का उल्लंघन करता है। अरे मुर्ख! इस ऐश्वर्य जीवन, पिता और मुझ माता को भी त्यागकर शत्रुओं की प्रसन्नता मेरा शौक बढ़ाता हुआ जब तू भीमसेन के हाथों मारा जायेगा, उस समय तुझे पिता की बातें याद आयेंगी' न्याय की ओर दृष्टि रखते हुए गान्धारी इस बात को भली प्रकार से जानती थीं कि मेरे अभिमानी पुत्र ने अगर ईर्ष्या या अहंकार का त्याग नहीं किया तो भारी विनाश को आमंत्रण देगा। वास्तविक रूप से सत्य ही कहा गया है कि नारी ही ऐसी शक्ति है जो धार्मिक भावनाओं का प्रसार करके सन्तान का नैतिक आचरण सुधारती है और अशान्त वातावरण में शान्ति के बीजांकुरित करती है। उपर्युक्त उदाहरणों के अनुसार यह ज्ञात होता है कि उस काल की नारी शिल्प, विज्ञान, गृहकार्य व राजनीति से जुड़ी शिक्षा में प्रवीण थी। वर्तमान की नारी को महाभारत कालीन 'नारी शिक्षा' से प्रेरित होकर अपने जीवन की जटिलता को दूर करना चाहिये, जिससे वह इस शिक्षा द्वारा गृहकार्यों, राज्यकार्यों में सहयोग कर सकती हैं। महाभारत काल की मन्त्र शिक्षा द्वारा वर्तमान में अपने जीवन की समस्यामूलक स्थिति से निजात प्राप्त कर सकती है। सौन्दर्य प्रसाधन जैसी शिक्षा द्वारा जीविकोपार्जन के द्वार खोल सकती है और माता द्वारा प्राप्त शिक्षा से वर्तमान में सन्तान के चरित्र निर्माण में गुणों का बीजारोपण कर सकती है। अतः आज आवश्यकता है नारी को महाभारत से प्राप्त उन आदर्श महिलाओं के पवित्र चरित्र ज्ञान की जिससे वे अपने जीवन को सार्थक बना सकती है। अगर आज महिला की स्थिति में परिवर्तनकारी बदलाव लाना है तो उसके लिए शिक्षा का कदम बढ़ाना उपयोगी सिद्ध होगा। शिक्षा को परिभाषित करते हुए महर्षि विवेकानन्द जीने अपने शब्दों में कहा था–'हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।'[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, प्रथम खण्ड, आदिपर्व, अध्याय 195, पृ.सं.649, श्लोक 6, सं. 2067.
2. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, तृतीय खण्ड, भीष्मपर्व, अध्याय 28, पृ.सं.680, श्लोक 38, सं. 2067.

3. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, प्रथम खण्ड, आदिपर्व, अध्याय 1, पृ.सं.26, श्लोक 115, सं. 2067.
4. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, डॉ. रामशकल पाण्डेय, श्रीविनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ.31,सं. 2012.
5. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 27, पृ.सं.100, श्लोक सं. 34, 35, 37,38, सं. 2070
6. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 28, पृ.सं.103, श्लोक 34, 35, 36, सं.2070.
7. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 183, पृ.सं.585, श्लोक 27, सं. 2070
8. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 233, पृ.सं.762 श्लोक 46, 48, सं.2070
9. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 233, पृ.सं.763 श्लोक 51, 53, 56 सं.2070
10. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड, वनपर्व, अध्याय 3, पृ.सं.1008, श्लोक 18, 19, सं. 2070
11. महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, तृतीय खण्ड, उद्योग पर्व, अध्याय 69, पृ.सं.252, श्लोक 9, 10, सं.2067
12. शिक्षा का अधिकार, डॉ. चन्द्रभूषण पाठक, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, पृ.सं.148, सं.2012

*****